

हिंदुत्त्व और हिन्दुस्तानी मुसलमान

यासीन अख्तर मिरबाही



रज़वी किताब घर
दिल्ली-110006

“हिन्दुत्व” और हिन्दुस्तानी मुसलमान

लेखक

यासीन अख्तर मिस्बाही

फ़ाउण्डर एवं चेयरमैन :
आल इंडिया मुस्लिम मुशावरती बोर्ड

प्रकाशक :

..... रज़वी किताब घर

425, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

फ़ोन : 011-23264524

© प्रकाशित करने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित

किताब का नाम : "हिन्दुत्व" और हिन्दुस्तानी मुसलमान

लेखक : यासीन अख्तर मिरचाही

पहला एडीशन (उर्दू) : 1423 हि० 2003 ई०

दूसरा एडीशन (हिन्दी) : 1423 हि० 2003 ई०

तीसरा एडीशन (अंग्रेज़ी) : 1423 हि० 2003 ई०

हिन्दी अनुवादक : सय्यद गुफ़रान अशरफ़

पृष्ठ : 32

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6



मिलने का पता :

रज़वी किताब घर

114, गैवी नगर, भिंवडी-421302

ज़िला थाना (महाराष्ट्र) फ़ोन : 255389

मुसलमानों की अधीनता व गुलामी "हिन्दुत्व" की बुनियादी सोच

"हिन्दुत्व" और "राष्ट्रीयता" के तीर व कमान से लैस संघ परिवार (आर.एस.एस. विश्व हिन्दु परिषद, विधार्थी परिषद, बजरंग दल, भारतीय जनता पार्टी वगैरह) हिन्दुस्तान की मुस्लिम आबादी के लिये आज कल काफी परेशानी का सबब और तकलीफ़देह रोग बना हुआ है। इन दोनों शब्दों की वह आवश्यकतानुसार और उपयोगितानुसार व्याख्या करता रहता है। हालांकि हिन्दुत्व हिन्दुओं का अपना निजी मसला है मगर इसके आक्रामक व्याख्या का प्रभाव किसी न किसी प्रकार से मुसलमानों ही पर पड़ता है। राष्ट्रीयता (कौमियत, नैशनलिज़्म) का भी लगभग ऐसा ही मामला है। और इसके शिकार भी मुसलमान ही होते रहते हैं। संस्कृति (तहज़ीब, कल्चर) और भारतीयता का भी यही हाल है। खुद अपने लिये हिन्दू इन शब्दों का जो भी मायने व मतलब समझें और उसके पाबंद रहें यह उनके अपने विवेक पर निर्भर है, मगर हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता (तहज़ीबी कौम परस्ती) वगैरह को जब वह मुसलमानों के सर थोप कर उन्हें इनका शिकार बनाने की कोशिश करते हैं तो बात गंभीर हो जाती है और हालात काबू से बाहर होने लगते हैं।

अक्सर हिन्दु आम तौर पर अमन व सुलह पसंदी और पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारने के कायल हैं और वह झगड़ा और फ़साद को नापसंद करते हैं। दीन धर्म के नाम पर वह कोई लड़ाई झगड़ा और शोर व हंगामा खड़ा करने से परहेज़ करना चाहते हैं। अपने रोज़गार व नौकरी की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देते हैं। मगर संघ परिवार उनकी इस परंपरा को तोड़ने पर उतारू है। वह उन्हें मुसलमानों के खिलाफ़ हमला व आक्रमण की राह पर लगाना चाहता है। मुसलमानों को विवश करके वह उनकी अधीनता व गुलामी का इच्छुक और उसके लिये दिल व जान से प्रयत्नशील है। ज़हरीली सोच और सरगर्मी का उसने अपना एक जाल फैला रखा है और हर तरफ़ से उन पर यलगार कर रहा है। उसका जोश जुनून इस वक्त शबाब पर है। मुसलमानों की पराजय और उनके नरसंहार का एक तर्जुबा (फ़रवरी, मार्च 2002) उसने गुजरात में कर लिया है और वह हेडगवार व सावरकर व गोलवालकर के नज़रियाती साया और अशोक सिंघल व नरेन्द्र मोदी व परवीन तोगड़िया के नेतृत्व में पूरे हिन्दुस्तान के अंदर गुजरात फ़ार्मूला के ज़रिये केसरया झंडा लहराने का इरादा कर चुका है।

अयोध्या से गुजरात तक और गुजरात से अयोध्या तक इसकी भाग दाड़ की आखिरी मंज़िल हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली है। और धर्म के नाम पर हिन्दु जज्बात को भड़का कर के संघ परिवार दिल्ली के तख्त व ताज का बिना किसी सहयोगी के मालिक बनने के लिये सर धड़ की बाजी लगाये हुए है। दस्तूरी व सियासी अख़लाक व सीमाओं को भी अपने पांव के नीचे रौंद कर वह आगे की तरफ बढ़ता जा रहा है। और जम्हूरियत व सेक्यूलरिज़्म की हैसियत उसकी नज़र में खिलौनों से कुछ ज्यादा नहीं है। इसका अपना मुद्दा सिर्फ हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता है। जिसके फ्रेम वर्क में मुसलमान किसी तरह फिट नहीं होते, इसीलिये वह उनकी विवशता व अधीनता के लिए जतन कर रहा है और इसके लिये अपना जत्था मजबूत से मजबूत बनाता चला जा रहा है। प्रोपगंडा और नफरत अंगेज़ी को उसने अपना हथियार बना रखा है और हिटलर के समर्थक गोयविल्ज़ का "झूठ फार्मूला" उसकी रहनुमाई कर रहा है। उसके पास ज़हर फैलाने वालों की कमी है न मुखौटों की किल्लत है। हर साइज़ हर कीमत और हर तरह का सामान उसके पास मौजूद है। नरम गरम खरे छोटे सब का उसके यहां ज़खीरा और भंडार है मगर इस वक़्त "मोदित्व" और "तोगाड़िया वाद" का दौर दौरा और बोल वाला है।

संघ परिवार की बुनियादी सोच इस्लाम दुश्मनी और मुस्लिम दुश्मनी पर आधारित है। अख़बारात व पत्रिकाओं ही के ज़रिये मुझे परिवार की सोच और दृष्टिकोण से अब तक मालूमात हासिल होती रही हैं। ज़िन्दगी में पहली बार मैंने संघ परिवार के एक प्रसिद्ध चिंतक व लेखक की एक पुस्तिका कुछ दिन पहले पढ़ी। जिससे परिवार के बारे में इस ख्याल को और बल मिला कि वह मुसलमानों का वजूद हिन्दुस्तान के अंदर सिर्फ इस सूरत में बर्दाश्त करने के लिये तैयार है कि उसके हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को मान कर मुसलमान इसके अंदर अपने आप को मिला लें या उसकी अधीनता व गुलामी की ज़िन्दगी गुज़ारने पर अपने आप को तैयार कर लें। इसी पुस्तिका को पढ़कर मैं इस नतीजे तक पहुंचा हूं। और यह नतीजा महज़ अख़बारी व हवाई नहीं बल्कि इसके अध्ययन से हर समझदार व्यक्ति इसी नतीजे तक पहुंचने पर अपने आप को मजबूर पायेगा।

श्री दीन दयाल उपाध्याय जी संघ परिवार के सैद्धांतिक मार्ग दर्शक हैं। उनके लेख एवं भाषण पर आधारित इस पुस्तिका का नाम है।

“अखण्ड भारत और मुस्लिम समस्या” इसके कुल बत्तीस पृष्ठ- हैं। जागृति प्रकाशन एफ 109, सेक्टर 27, नोएडा, गाज़ियाबाद (यू.पी.) का एडीशन 1996 ई. इस समय मेरे सामने है। उपाध्याय जी के संबंध में मेरी धारणा एक बुलंद हिन्दुस्तानी लीडर और संघ परिवार का प्रसिद्ध चिंतक व दार्शनिक की थी मगर इस पुस्तिका को पढ़ने के बाद मेरा यह विचार एकदम बदल गया। और मुसलमानों के संदर्भ से इनका दृष्टिकोण व ग़लत विचार एवं संदेह खुलकर सामने आ गए, सुनी सुनाई बे बुनियाद बातें उनके विचार एवं शोध की जमा पूंजी है। और वह मुसलमानों को हिन्दुस्तान का वफ़ादार नागरिक बिल्कुल नहीं समझते हैं। और अपने काल्पनिक हिन्दुत्व व राष्ट्रीयता को मुसलमानों के सर पर थोपने के लिये तैयार व कमर बांधे नज़र आते हैं। इसके लिये वह बहुमत और ताक़त का सहारा लेना भी ज़रूरी समझते हैं और सियासी तौर पर इन्हें कुचल देना चाहते हैं।

17 मई 1965 ई. में आंध्र प्रदेश के अंदर संघ परिवार के एक प्रशिक्षित वर्ग को संबोधित करते हुए उपाध्याय जी ने कहा।

“चिंता का विषय यह है कि मुसलमान बनने के बाद उसकी प्रकृति ही बदल जाती है। वह राष्ट्र से अलग हो जाता है। और राष्ट्र के लिये शत्रु हो जाता है।” (पेज 7, अखण्ड भारत और मुस्लिम समस्या)

“यह कहना पड़ता है कि यहां का मुसलमान राष्ट्रीय नहीं। हिन्दुस्थान—विरोधी जो जो चीज़ें होंगी, वह उनको ही अपनाता है।” (पेज 11)

“राजनीतिक दृष्टि से हम, आंग्ल—भारतीय (Anglo Indians) और मुसलमान भारत के नागरिक हैं पर राष्ट्रीयता की दृष्टि से हम में आंग्ल भारतीय और मुसलमानों में ज़मीन—आसमान का अंतर है।” (पेज 7)

उपाध्याय जी यह कह रहे हैं कि मुसलमानों के अंदर राष्ट्रीयता (कौम दोस्ती) बिल्कुल नहीं है। जो व्यक्ति मुसलमान होता है उसकी सोच शीघ्र ही बदल जाती है। और वह कौम दुश्मन हो जाता है। मुसलमान भारत का नागरिक होते हुए भी राष्ट्र से अलग और इसके विरुद्ध हो जाता है बल्कि वह भारत से अलग हो जाता है।

कौम और जनता संघ परिवार की इस्तेलाह में केवल हिन्दु को कहते हैं। मुसलमान उसकी दृष्टि में “जनता” (अवाम) नहीं, और वतनी लिहाज़ से भी मुसलमान हिन्दुस्तानी कौम नहीं, इसी लिये वह मुसलमानों

को कभी मुल्क दुश्मन और कभी भारत दुश्मन कहता है। वह चाहता है कि राष्ट्रीयता के नाम पर मुसलमान उसके अंदर ज़म होकर अपने आस्तीत्व का बलिदान कर दें। यही कारण है कि वह बहुमत और अल्पसंख्यक की इस्तेलाह को नापसंद करता है। यानी हिन्दुस्तान में सिर्फ हिन्दु का वजूद है इसके अलावा किसी का वजूद बुनियादी तौर पर स्वीकार नहीं।

मुसलमान को संघ परिवार अल्पसंख्यक भी नहीं मानता जिसकी वजह यह है कि इसके कहने के मुताबिक हिन्दु तो कोई भी दीन धर्म नहीं बल्कि एक जीवन यापन का तरीका (Way of Life) है। इसलिये परिवार ही लॉजिक के अनुसार केवल हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता को स्वीकार करने वाले हिन्दु का कोई मज़हबी वजूद ही नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में मुसलमान इस देश की मज़हबी अकलियत नहीं बल्कि मज़हबी अक्सरियत बनकर नंबर एक पर आ जायेंगे। वह तो इसे किसी भी तरह से नंबर दो पर ही रखना चाहता है। इसके लिये उसे चाहे जो कुछ भी कर गुज़रना पड़े।

बहरहाल! मुसलमान होना संघ परिवार की नज़र में राष्ट्र और भारत से अलग हो जाना है। यही विचार श्री गोलवालकर का भी है जैसा कि वह कहते हैं :

“जब पेड़ में दूसरी कलम लगाई जाती है तब पेड़ की प्रकृति ही बदल जाती है, उसी तरह जब कोई मुसलमान बनता है तो वह भी उसी गुण को ग्रहण कर लेता है और भारत से अलग हो जाता है।” (पेज 8)

संघ परिवार हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तानी और हिन्दु सब को एक समझ कर राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व के नारे लगाता है। हालांकि यह तीनों अलग अलग चीज़ें हैं। हिन्दुस्तान एक देश है, जिसके अंदर रहने वाले और सभी शहरी हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तानियों की बड़ी संख्या हिन्दु है। हिन्दुस्तान से प्रेम करना और उसकी भलाई एवं विकास के लिए प्रयास करना हर हिन्दुस्तानी का कर्त्व्य है। अपने वतन की रक्षा एवं सुरक्षा के कर्त्व्यों से मुंह मोड़ने वाला और उसकी तबाही व बर्बादी की इच्छा रखने वाला कोई भी नागरिक इसका बागी व ग़दार हुआ करता है। अपने दीन धर्म और अपनी सांस्कृतिक एवं सभ्यता को जीवित रखने के साथ राष्ट्रीय, सामाजिक एवं व्यापारिक संबंध स्थापित रखना और नफ़रत और हिंसा से अपनी सोसायटी और अपने देश को दूर रखना हर बद्धिमान हिन्दुस्तानी

की जिम्मेदारी है। इसी का नाम अगर राष्ट्रीयता है तो मुसलमान श्रेष्ठ राष्ट्रवादी हैं। और अगर राष्ट्रीयता का मतलब यह है कि मुसलमान भी भजन गाने लगे, तिलक लगाने लगे, मिट्टी, पत्थर की पूजा करने लगे, चोटी रखने लगे, सिर्फ लंगोट लंगोट बांधने लगे, जनेव पहनने लगे, भभूत मलने लगे, और ऐसा करने वालों की जय जय कार करने लगे तो एक पल के लिये भी वह इस तरह का राष्ट्रवादी बनना कभी स्वीकार नहीं कर सकता और मुसलमान ऐसे राष्ट्रवादी न कभी थे और न भविष्य में कभी हो सकते हैं।

राष्ट्रवाद का मतलब सिर्फ और सिर्फ देश प्रेम सामाजिक मित्रता, शांतिमय जीवन और अपने धर्म एवं संस्कृति पर कायम रहते हुए राष्ट्र की रक्षा, निर्माण तथा विकास में भागेदारी! इसके अलावा कोई राष्ट्रीयता मुसलमान के लिये स्वीकार्य नहीं।

उपाध्याय जी ने श्री गोलवालकर के इस विचार का भी उल्लेख किया है कि मुसलमान सामूहिक रूप से बुरे होते हैं, और हिन्दु सामूहिक रूप से अच्छे होते हैं। अतः अपने भाषण में वह कहते हैं :

“एक समय श्री गुरुजी की विनोबा जी से भेंट हुई। बातचीत के दौरान विनोबा जी ने संघ के कार्य सम्बन्धी बातचीत में कहा कि संघ मुसलमानों का शत्रु है और इस पर चर्चा प्रारम्भ हुई। उन्होंने कहा कि मुसलमानों में भी भले आदमी हैं, तब श्री गुरु जी ने कहा “हम मुसलमानों के शत्रु नहीं। मुसलमानों में कुछ लोग भले हो सकते हैं और हिन्दुओं में बुरे भी हैं। पर विचारणीय बात यह है कि हिन्दु व्यक्तिशः बुरा हो सकता है लेकिन सामूहिक रूप से वह अच्छा ही है, इसके विपरीत व्यक्ति रूप में मुसलमान अच्छा हो सकता है। पर सामूहिक रूप में वह बुरा ही है।” (पेज 8)

मुसलमानों को सामूहिक रूप से बुरा समझना इस्लाम और मुसलमानों को भली भांति न समझने के कारण है या उसके पीछे सिर्फ मुस्लिम दुश्मनी की भावना कार्यरत है। इस तरह का जिस का भी विचार हो उसे अपनी सुधार कर लेनी चाहिये। वैसे हम समझते हैं कि इस प्रकार का विचार कूड़ेदान में फेंक देने के योग्य है और इसके बारे में कुछ विश्लेषण और विचार विमर्श करना भी अपना समय बर्बाद करना है।

उपाध्याय जी हिन्दुस्तान के मुसलमानों को आक्रमणकारी और बाबर का वारिस समझते हैं। अतएव 1965 ई. में पूणे (महाराष्ट्र) के अंदर

अपने एक भाषण में उन्होंने कहा :

“यहां मुसलमान तलवार लेकर ही आये थे, इस बात को भुलाया नहीं जा सकता। इसलिये यह भी नहीं भूलना चाहिये कि मुसलमानों से चला आ रहा हमारा संघर्ष धार्मिक नहीं, राजनीतिक है।” (पेज 24)

और इसी साल के अपने एक भाषण (आन्ध्र प्रदेश) में उन्होंने यह भी कहा है :

“भारत में इस्लाम मौलवी या फकीरों के प्रचार के द्वारा नहीं आया, अपितु वह आक्रमणकारियों के द्वारा आया। हिन्दुस्थान में वे अपने-आपको विजेता समझने लगे। जो व्यक्ति हिन्दुस्थान में मुसलमान बना, वह भी अपने आपको विजेता रूप में समझने लगा और यहां की प्रत्येक वस्तु से घृणा करने लगा। बाबर भारत में विजेता के रूप में आया, इस कारण यहां का मुसलमान भी अपने आपको बाबर की श्रेणी में अर्थात् विजेता के रूप में समझने लगा। इसका परिणाम मुसलमान के अन्तःकरण में आज तक है।” (पेज 10)

मुसलमानों के बारे में हिन्दुओं के एक अच्छे खासे वर्ग के दिल व दिमाग में यह ग़लत धारणा जड़ जमाये हुए है कि आक्रमणकारियों और विजेताओं के साथ ही मुसलमान भी हिन्दुस्तान में प्रवेश हुए और खून खराबे व लूट मार के सिवा उनका कोई काम नहीं था। इतिहास को पढ़ने की भी ऐसे लोग कोई ज़रूरत महसूस नहीं करते। सुनी सुनाई बातों को दोहराते रहते हैं। चाहे वह इतिहास के बिल्कुल विरुद्ध ही क्यों न हो, बल्कि अब तो गढ़ी हुई इतिहास लिखने और उसे पढ़ाने का संघ परिवार ने निश्चय ही कर लिया है।

आज से सतरह अट्ठारह साल पहले की बात है एक बार मैं दिल्ली के लाल किला के अंदरूनी हिस्से में सैर कर रहा था, दीवान-ए-आम के बाद दीवान-ए-खास के बीच पहुंचा तो देखा कि एक दीवान-ए-खास के दर व दीवार से लगी हुई कुछ चीजें उखड़ी हुई नज़र आयीं, मेरे आगे पीछे छोटे बड़े बहुत से स्थानीय व बाहरी लोग थे। कुछ नौजवान हिन्दु स्टूडेंट भी थे। वह आपस में बातें करते जा रहे थे कि इन सुराखों के अंदर हीरे जवाहरात जड़े हुए थे, उसी दौरान एक हिन्दु स्टूडेंट बोल उठा कि “गजनवी” (गज़नवी) उन्हें उखाड़कर ले गया होगा। इस बेचारे स्टूडेंट को यह भी पता नहीं था कि लाल किला का निर्माण करने वाले मुग़ल शहंशाह शाहजहां और महमूद गज़नवी के शासनकाल में कितना

लंबा फासला है?

बाबर, गौरी और गज़नवी जहां मुसलमान थे वहीं विजयी शासक भी थे। हिन्दुस्तान के राजा महाराजा जिस तरह एक दूसरे पर चढ़ दौड़ते थे और हुकूमत व सल्तनत पर कब्ज़ा कर लिया करते थे यही हाल इन विजेताओं का भी था। और उस ज़माने में सारी दुनिया के विजेताओं का यही स्वभाव एवं व्यवहार था। इसलिये सिर्फ़ मुस्लिम विजेताओं को निशाना बनाते रहना इन्साफ़ और इतिहास दोनों का मज़ाक़ उड़ाना है। उपरोक्त मुस्लिम शासकों के हमले से बहुत पहले लाखों मुसलमान हिन्दुस्तान के अंदर मौजूद थे। और इस्लाम अरब व्यापारियों और प्रचारकों के द्वारा सातवीं सदी ईसवी ही में क्षेत्र माला बार (केरला) इत्यादि को अपने प्रकाश से उज्ज्वल कर चुका था। इस्लाम को अरब व्यापारियों और प्रचारकों ने हिन्दुस्तान के अंदर फैलाया है। और फिर सूफ़ीयों एवं बुजुर्गों ने बड़े पैमाने पर इस्लाम प्रचार किया। यही लोग इस्लाम के प्रचारक और यही महापुरुष मुसलमानों के पूर्वज हैं। इसलिये यह कहना सरासर ग़लत है कि हिन्दुस्तान में इस्लाम पीर व फ़कीर नहीं बल्कि शासकों के द्वारा आया और फैला। भारतीय इतिहास का गहराई से अध्ययन करें तो आसानी से समझ में आ जायेगा कि यह शासक इस्लाम का प्रचार करने नहीं बल्कि अपने शासक एवं साम्राज्य की सीमा विस्तृत करने आये थे।

क्या अपने पड़ोसी देश चीन और फिर इंडोनेशिया और मलेशिया को नहीं देखते कि वहां इस्लाम कैसे फैला? और आज वहां करोड़ों की संख्या में मुसलमान कैसे पैदा हो गये? इन देशों में अरब या ईरान व अफ़ग़ानिस्तान के कितने बाबर व गौरी और गज़नवी आक्रमणकारी गए थे? इतिहास बताता है कि इन देशों में इस्लाम की इंसानियत प्रिय प्रकाशमयी शिक्षा और मुस्लिम प्रचारकों व सुधारकों के प्रेम व आचरण और इस्लामी शिक्षा के आकर्षण ने लाखों इंसानों को अपना बना लिया था और वह सामूहिक रूप से इस्लाम अपनाते चले जाते थे।

मुसलमान होना संघ परिवार की नज़र में इतना बड़ा जुर्म है कि मुग़ल शासनकाल को वह अपनी गुलामी का ज़माना समझता है। अतएव उपाध्याय जी कहते हैं :

“अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगज़ेब सभी देशज थे, किन्तु

उनका राज्य स्वराज्य नहीं था।" (पेज 26)

जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर जिस ने हिन्दुओं को खुश करने के लिये हिन्दु रस्म व रिवाज ही नहीं बल्कि हिन्दु आस्था भी अपना लिया और अपना दीन ईमान बेचकर एक नया धर्म "दीने इलाही" के नाम से ईजाद किया, इस्लामी निशानियों का मज़ाक उड़ाया, इसके बारे में भी उपाध्याय जी कहते हैं:

"तो क्या मुगलों के राज्य को पराया राज्य नहीं मानना चाहिये? और मुगल शासन को यदी पराया न मानना हो, तो स्वराज्य के लिये उस सत्ता से लड़ने वाले शिवाजी को स्वराज्य द्रोही मानना पड़ेगा। अकबर को अपना नानें तो उसके विरुद्ध लड़ते रहे राणा प्रताप को देशभक्त कहा ही न जा सकेगा। और राणा प्रताप, शिवाजी, दुर्गावती, छत्रसाल को देशभक्त कहना हो तो उन सबको जिनके विरुद्ध ये देशभक्त लड़ते रहे, पराये ही मानना पड़ेगा। अकबर महान्न होगा, किन्तु वह हमारा नहीं था। हम जब कहते हैं कि हजार वर्ष कि पराधीनता से हम मुक्त हुए, तो इसका सीधा अर्थ यही होता है कि अकबर के शासन में हम पराधीन थे।" (पेज 23, 24)

नमाज़, रोज़ा का मज़ाक उड़ाने वाले और हिन्दुवाना ज़िन्दगी गुज़ारने वाले अकबर को जब सिर्फ़ मुस्लिम घराने में पैदा होने की वजह से संघ परिवार अपना समझने के लिये तैयार नहीं तो वह चंद नाम के मुसलमान स्वयं अपना अंजाम समझ लें जो परिवार की चापलूसी एवं पैरवी करके चंद रोज़ की नुमाईशी कुर्सी पर बैठे हुए आज सिकंदर व मुख्तार बने फिर रहे हैं। ऐसे लोग अपने धर्म को बेच करके परिवार के अंदर या तो पूरे तौर पर घुल मिल जायेंगे या गन्ने की तरह इन्हें चूस कर बाहर फेंक दिया जायेगा। उपनिषद लिखने लिखाने वाला मुगल शहजादा दारा शिकोह भी हिन्दु रंग में रंग गया था मगर आज तक वह ग़ैर ही समझा जाता है। कोई हिन्दु उसे अपना मानने को तैयार नहीं।

"न खुदा ही मिला न विसाले सनम"

हिन्दुस्तान की आज़ादी से पहले दिल्ली और उसके बाद "रावलपिंडी" का तख़्त तोड़ कर अखंड भारत बनाना एक ऐसी दबी हुई इच्छा और पलती हुई भावना है जिसका किसी न किसी रूप में बार बार स्पष्टीकरण हो ही जाता है अखंड भारत का दृष्टिकोण कुछ इस तरह सामने आता है:

“मुसलमानों की राजनीतिक आकांक्षा को पराजित करने का प्रयत्न शिवाजी ने किया। सदाशिव भाऊ ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिल्ली का तख्त तोड़ा। क्योंकि उस समय वह तख्त ही उनकी राजनैतिक प्रभुता का प्रतीक था। आज पुनः उसी दूषित प्रवृत्ति को नष्ट करना है तो उसके तख्त को तोड़ना होगा। किन्तु उसका तख्त अब दिल्ली में न होकर रावलपिण्डी में है। अतः जब तक रावलपिण्डी का तख्त नहीं टूटता तब तक राष्ट्रीय आत्मसातीकरण (National Assimilation) का कार्य प्रारम्भ नहीं होगा।” (पेज 21)

“जो कार्य छत्रपति शिवाजी महाराज ने किया था, आज उसे पुनः आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। तभी मुसलमान राष्ट्रीय समाज के साथ एकरूप होने को सिद्ध हो पायेगा और तभी अखण्ड भारत का स्वप्न साकार हो सकेगा।” (पेज 22)

भारत के अंदर सिर्फ पाकिस्तान (रावलपिण्डी व ढाका) को शामिल करके अखंड भारत बनाने का सपना क्यों देखा गया? इसका कारण बताने की ज़रूरत नहीं, इसे कुरेद कर देखा जाये तो मुस्लिम दुश्मनी का बीज आसानी से नज़र आ जायेगा। पूर्ण स्वराज संघ परिवार को उसी समय हासिल होगा जब पाकिस्तान (रावलपिण्डी व ढाका) का नाम व निशान दुनिया के नक्शे से मिट जाये। उपाध्याय जी कहते हैं कि भारत की धरती के एक हिस्से पर पाकिस्तान (रावलपिण्ड, ढाका) का वजूद गुलामी की यादगार का एक क्रम है। गोवा और हैदराबाद की तरह पाकिस्तान को भी अपने अंदर मिला लिया जाना चाहिये। पाकिस्तान को आज़ाद कराना उस पर कोई हमला नहीं बल्कि हमारा हक है। अतएव उनका विचार है कि:

“स्वतन्त्रता और परतन्त्रता में सह-अस्तित्व कैसे सम्भव है? ये दोनों बातें परस्पर विरोधी हैं। शिवाजी महाराज ने जिस स्वराज्य की स्थापना की, उसी के आधार पर और उसी शैली में वे संपूर्ण भारत को स्वतन्त्र करना चाहते थे। वैसी महत्तवाकांक्षा उन्होंने रखी थी। हम भी मानते हैं कि जिस प्रकार हमने गोवा और हैदराबाद को मुक्त किया, उसी प्रकार हमारी अपनी भूमि पर खड़े पाकिस्तान को मुक्त करना हमारा कर्तव्य ही नहीं, मौलिक अधिकार है। अपनी भूमि पर किसी भी विदेशी सत्ता को हमें कदापि सहन नहीं करना चाहिये। पाकिस्तान को मुक्त करना हमारा आक्रमण नहीं होगा, वह हमारा अधिकार है।” (पेज 23)

“1947 में पाकिस्तान बना। वह देश का विभाजन नहीं था। इस सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि मुगल काल से हमारी मातृभूमि परतन्त्र थी। उसका एक भाग स्वतन्त्र हो गया और एक भाग फिर से गुलाम हो गया।” (पेज 24)

ऐसा नहीं कि समय और परिस्थिति बदल जाने के बाद अखंड भारत की कल्पना अब धीमी पड़ गयी। खुद इस पम्फलेट और इस तरह के दूसरे लिटरेचर के लगातार प्रकाशन का औचित्य इसके सिवा और क्या है कि अखंड भारत का दृष्टिकोण कमजोर न हो बल्कि नित्य फलता फूलता रहे। अभी दिसंबर 2002 में गुजरात इलेक्शन के मौके पर विश्व हिन्दु परिषद के जनरल सेक्रेटरी परवीन तोगाड़िया ने डंके की चोट पर कहा कि रावलपिंडी का तख्त तोड़ देना है। यह भी उसी अखंड भारत के दृष्टिकोण का नया एलान है। जिसका सीधा मतलब यह हुआ कि एक आज़ाद मुस्लिम देश का अस्तित्व अब तक गले के नीचे से नहीं उतर सका है।

नेपाल, बर्मा व लंका जो बहुत पहले हिन्दुस्तान से अलग हो चुके हैं उन्हें इस अखंड भारत में शामिल करने की कोई ज़रूरत नहीं समझी जाती है, क्योंकि वह अपने हैं और उनके अंदर राष्ट्रीयता है। राज अलग हो चुका है मगर राष्ट्र उनका और भारत का एक ही है। वहां के लोग अलग देश के नागरिक हैं मगर राष्ट्रीयता सब की एक ही है यह फर्क स्पष्ट करने के बाद उपाध्याय जी कहते हैं:

“नेपाल भी राजनीतिक दृष्टि से एक स्वतन्त्र राज्य है, पर वह भारतीय राष्ट्रीयता के विपरीत कभी गया नहीं। इतना ही नहीं, जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था, तब नेपाल एक स्वतन्त्र राज्य था और यहां के हिन्दुओं को इस बात का स्वाभिमान था कि एक हिन्दु राज्य स्वतन्त्र है। उसी तरह बर्मा जब अलग हुआ, तो अलग होने के बाद भी उसने राष्ट्रीय एकता से किसी तरह का विभेद प्रकट नहीं किया। लंका के सम्बन्ध में भी यही बात है। नेपाल, बर्मा और लंका भारत से अलग होने पर भी भारत की राष्ट्रीयता के विरोध में नहीं है, और न ही उन्होंने भारत की पवित्र भावनाओं का उल्लंघन किया है। इसलिये यह अखण्ड भारत में मिलेंगे या नहीं, ऐसी कोई बात नहीं उठती। पाकिस्तान का सवाल इन देशों की तरह नहीं है, क्योंकि पाकिस्तान ने अपना अस्तित्व भारत की

राष्ट्रीयता से अपना सम्बन्ध काट कर स्थापित किया है। यह जहर के समान है।" (पेज 15)

पाकिस्तानियों के अंदर संघ परिवार जैसी राष्ट्रीयता कैसे और क्यों कर होगी? जब कि स्वयं हिन्दुस्तानी मुसलमानों के अंदर संघ परिवार के अनुकूल राष्ट्रीयता नहीं है। और किसी भी मुसलमान के अंदर ऐसी राष्ट्रीयता कैसे हो सकती है? जब कि स्वयं उपाध्याय जी का व्यन इस से पहले गुजर चुका है कि मुसलमान होते ही राष्ट्रीयता खत्म हो जाती है। और हम भी साफ़ साफ़ यह बता चुके हैं कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों के अंदर कौन सी राष्ट्रीयता हो सकती है और उनके अंदर किसी तरह की राष्ट्रीयता के होने की कोई संभावना नहीं है?

जन संघ (जिसका बदला हुआ मौजूदा नाम भाजपा है) का आदर्श ही अखंड भारत है। (पृष्ठ 17) 1952 ई० में उपाध्याय जी के द्वारा प्रस्तुत जनसंघी उसूल में इसका स्पष्ट ऐलान और उसके लिये नित्य व लगातार प्रयत्न करते रहने का निश्चय तथा प्रण इस तरह है :

"अखण्ड भारत मात्र एक विचार न होकर, विचारपूर्वक किया हुआ संकल्प है। कुछ लोग विभाजन को पत्थर की रेखा मानते हैं। उनका ऐसा दृष्टिकोण सर्वथा अनुचित है। मन में मातृभूमि के प्रति उत्कृष्ट भक्ति न होने का ही परिचायक है। ऐसे लोगों ने न केवल अपने इतिहास को भुला दिया है, अपितु इतिहास का उन्हें यथार्थ ज्ञान भी नहीं है। मुसलमानों के शासन में भी इस देश के अनेक टुकड़े हो गये थे। किन्तु उस समय के हमारे अध्वर्युओं ने उन टुकड़ों को वज्रलेप नहीं माना था। अखण्ड भारत के लिये वे लड़ते रहे थे।" (पेज 30)

उपाध्याय जी ने हिन्दुस्तानी मुसलमानों की समस्या का यह समाधान ढूँढ निकाला है कि उनकी राजनैतिक पराजय के बाद ही इन्हें काबू में किया जा सकता है। पाकिस्तान को मात दे दी जाये तो हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने आप टंडे हो जायेंगे, हमारा मकसद अपने आप हल हो जाएगा, एकता का आरंभ हो जायेगा, और इस राजनैतिक पराजय के नतीजे में वह हमारे अंदर घुल मिल कर मस्जिदों से भी दूर हो जायेंगे।

मुसलमानों की राजनैतिक पराजय के बारे में उपाध्याय जी कहते हैं कि इसके बाद इन्हें अपने आप में मिलाना आसान हो जायेगा। और

इस निशाना तक पहुंचने के लिये पाकिस्तान (रावलपिंडी व ढाका) को तोड़ना जरूरी है।

पाकिस्तान भौगोलिक रूप से छोटा सा देश है इसे पराजित करना भारत जैसे विशाल देश के लिये कोई कठिन काम नहीं है। (पृष्ठ 16) जब तक पाकिस्तान को पूर्ण राजनैतिक पराजय नहीं दी जाती उस वक्त तक हिन्दुस्तान के मुसलमानों का हौसला और सोचने का अंदाज बदलना संभव नहीं है। (पृष्ठ 17) मुसलमानों को जब तक राजनैतिक पराजय नहीं दी जाती उस वक्त तक एकता का कार्य आरंभ नहीं होगा। (पृष्ठ 16) अपना यह विश्वास है कि मुसलमानों की राजनैतिक पराजय के नतीजे में दूसरी राहें अपनाना और मक़सद हल करना आसान हो जायेगा। (पृष्ठ 18)

राजनैतिक पराजय के बाद अखंड भारत को स्वीकार कर लेने, हिन्दु समाज में घुल मिल कर हिन्दु हो जाने और मस्जिद से दूर हो जाने के बारे में उपाध्याय जी कहते हैं:

“सर्वसाधारण सिद्धान्त है कि पराजय आत्मलोचन को प्रेरित करती है। अतः पराभूत होने पर वही मुसलमान आत्मालोचन के लिये तत्पर होगा। जब वह आत्मालोचन करेगा तब सही बातें सामने आयेंगी। फिर वह सोचेगा हिन्दुओं से अलग रहने में फ़ायदा नहीं है। इस तरह वह वरिष्ठता का भाव त्यागकर यहां के समाज से, जो हिन्दु समाज है, समरस होगा। फिर यह सोचेगा—अन्य जैसे राजपूत हैं मैं भी वैसा ही राजपूत हूं वे हिन्दू है तो मैं भी हिन्दु हूं। तब वह मस्जिद में भी जाना आवश्यक नहीं समझेगा। इस तरह सांस्कृतिक मिलन की प्रक्रिया प्रारंभ होगी। तब वह अखण्ड भारत में भी विश्वास करेगा।” (पेज 19)

उपाध्याय जी का कहना है कि तहज़ीब (संस्कृति, कल्चर) का सम्बंध धर्म से नहीं बल्कि देश से है। और ग़ैर भारतीय संस्कृति वाले लोग भारतीय कैसे हो सकते हैं? जिसका सीधा मतलब यह हुआ कि मुसलमान चूंकि मुस्लिम संस्कृति के मानने वाले हैं इसलिये वह भारतीय नहीं हो सकते हैं। और भारतीय संस्कृति से अलग उन की संस्कृति (तहज़ीब) है तो यह देश उनका कैसे हो सकता है। (पेज 11)

“भारतीय मुसलमान कहते हैं कि इस्लाम उनका मज़हब भी है और संस्कृति भी। लेकिन संस्कृति का सम्बन्ध देश और राष्ट्र के साथ

होता है। मजहब के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। इसलिये इस्लाम को 'संस्कृति' कहना ग़लत है।" (पेज 11)

"भारत की संस्कृति से भिन्न यदि उसकी संस्कृति है तो यह देश उसका कैसे हो सकता है?" (पेज 11)

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि आखिर भारतीय संस्कृति है क्या? जिसे अपनाने के लिये मुसलमानों को मजबूर किया जा रहा है। उसका विवरण सामने आए तो किसी नतीजे तक पहुंचा जा सकता है। लिबास, बोल-चाल, खाना पीना, रहना सहना, सारे हिन्दुस्तानियों का न पहले एक जैसा था न इस समया एक जैसा है न आइंदा होगा। अलग अलग प्रदेशों जातियों एवं कबीलों की अलग अलग पहचान और सम्यता व संस्कृति है स्वयं इन हिन्दुओं के मध्य भी अनेक मतभेद हैं। तो आखिर मुसलमान ही से इसकी शिकायत और इसका मांग क्यों है कि वह संघ परिवार की भारतीय संस्कृति अपनायें? क्या सूटेड बूटेड होकर अंग्रेजी बोलते हुए फाइव स्टार होटलों में पार्टियां देना, प्रेस कांफ्रेंस करना, हवाई जहाजों से उड़ान भरकर रैलियां करना, उत्तेजित भाषण देना, अखबार टीवी पर ब्यान देना, फोटो खिंचवाना, आलीशान बंगलों में रहना, इम्पार्टेड गाड़ियां रखना, हजारों लाखों की टी पार्टियां करना, दावतें उड़ाना, सियासी जोड़ तोड़ करके बहुमत में रहना, मोबाइल, कम्प्यूटर इत्यादि का उपयोग करना भारतीय संस्कृति है? और अगर यही भारतीय संस्कृति है तो फिर इन कामों में कौन किस से पीछे रहना चाहता है? शान व शौकत, कुर्सी व इक्तिदार और धन व दौलत हासिल करने की संस्कृति (तहजीब) कम व बेश सब के यहां आज कल बराबर ही है। अपनी बिसात के अनुरूप हर जाति, समाज और व्यक्ति आज की तड़क भड़क और चका चौंद जिन्दगी का इच्छुक है।

और अगर भारतीय संस्कृति का यह मतलब है कि धोती, लंगोट, खड़ाव पहना जाये हाथ में कमंडल व त्रिशूल रखा जाये, बगल में जनेव हो, सर पर चोटी और जटा हो, माथे पर तिलक हो, बोल चाल की ज़बान संस्कृत हो, पेड़ के पत्तों पर शुद्ध भोजन खाया जाये एक बीवी के कई कई शौहर हों, शौहर के मरने के बाद बीवियां सती हों, शूद्रों, दलितों को जानवर से बदतर समझा जाये, इत्यादि। तो फिर संघ परिवार यह संस्कृति अपने पास ही रखे। और अगर उसे फैलाना हो तो पहले सारे हिन्दुओं को इसका पाबंद बनाये। इसके बाद ही कोई बात करे। फिर भी मुसलमान इस संस्कृति से हर हाल में दूर ही रहेंगे।

संघ परिवार मुसलमानों से मांग करता है कि राम और कृष्ण को अपना पूर्वज मानें। अतएव उपाध्याय जी कहते हैं:

“हमने कहा राम और कृष्ण अपने पूर्वज हैं। परन्तु वह इन्हें अपना पूर्वज न मानकर अलग से दूसरे पूर्वजों को मानता है।” (पेज 10)

उपाध्याय जी के इस नई रिसर्च से हम हैरत में पड़ गये कि रुस्तम व सोहराब और चंगेज हलाकू मुसलमानों के पूर्वज हैं। वह उन्हें अपना पूर्वज समझते हैं। मगर राम लक्ष्मण को अपना पूर्वज मानने को तैयार नहीं। (पृष्ठ 12) मुसलमान तो रुस्तम व सोहराब और चंगेज व हलाकू जैसे लोगों के अंदर न किसी नैतिक व व्यावहारिक गुण को मानते हैं। न उन्होंने या किसी इतिहासकार ने इनके इस्लाम व ईमान का दावा किया है। न मुसलमानों की धार्मिक किताबों में इनका कोई नाम है न ही मुसलमान अपने इतिहास एवं राजनीति के क्षेत्र में न समाजी तौर पर उनका कहीं गौरवपूर्ण चर्चा करता है। तो फिर वह मुसलमानों के पूर्वज कैसे हो गये?

फ़ारसी तारीख़ में रुस्तम व सोहराब बहादुर सिपहसालार ज़रूर समझे जाते थे मगर मुसलमानों ने उन्हें अपना कभी नहीं समझा। चंगेज व हलाकू तो दुनिया भर में ज़ालिम व खूंख़ार की हैसियत से मशहूर हैं उन्हें मुसलमानों के सर मंढने की उपाध्याय जी को बड़ी दूर की सूझी है।

और उस समय तो हम पर हैरतों के पहाड़ टूट पड़ा जब हमने जीवन में पहली बार उपाध्याय जी का यह ऐतिहासिक अनुभव पढ़ा कि करबला में हसन व हुसैन के दर्मियान जंग हुई, जिसकी याद में यहां के मुसलमान मुहर्रम मनाते हैं। और भारत के पूर्वज राम जिन का रावण से युद्ध हुआ और उसकी याद में राम लीला मनाई जाती है। मगर मुसलमान इस रामलीला को नहीं मानते। (पृष्ठ 12-13)

इमाम हसन और इमाम हुसैन दोनों सगे भाई और इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे (नाती) थे। उनके बीच कभी कोई जंग नहीं हुई। करबला की जंग इमाम हुसैन और यज़ीद की फ़ौज के बीच हुई और जिस वक़्त यह जंग हुई उस वक़्त इमाम हसन इस दुनिया में ही नहीं थे। करबला में हसन व हुसैन के बीच जंग की बात कहना ऐसा ही है जैसे हिन्दुस्तानी इतिहास से कोई नावाकिफ़ आदमी किसी हिन्दु के सामने यह कहे कि राम और लक्ष्मण के दर्मियान युद्ध हुआ और उन्हीं के दर्मियान महाभारत हुई।

राम और लक्ष्मण को क्या सारे हिन्दु अपना पूर्वज मानते हैं? क्या सूद व दलित इन्हें अपना पूर्वज मानते हैं? क्या सिख, जैन, बौद्ध उन्हें अपना पूर्वज मानते हैं? अगर वह नहीं मानते और न मानने के लिये तैयार होते हैं तो फिर इसकी मांग मुसलमानों ही से संघ परिवार बार बार क्यों करता है कि वह राम व लक्ष्मण को अपना पूर्वज मानें? और क्या दूसरे देशों के हिन्दु नागरिकों से भी परिवार ने कभी यह कहा है कि वह वहां के पूर्वजों को अपना पूर्वज मानें? वरना अपने मुल्क के वफादार नागरिक नहीं हो सकते।

हिन्दुस्तान के अंदर दुनिया के पहले इंसान और अल्लाह के पहले पैगम्बर हज़रत आदम ने सब से पहले कदम रखा। और हिन्दुस्तानी मुसलमान बिना किसी संकोच के उन्हें अपना पूर्वज मानते हैं। महान इंसान और पैगम्बर होने की वजह से सारे हिन्दुस्तानियों को उन्हें ही अपना पूर्वज मानना भी चाहिये। बुद्धि एवं विवेक का यही तकाज़ा है।

उपाध्याय जी कहते हैं कि जब आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन चलाया उस वक्त मुसलमानों ने एक गीत बनाया कि:

मेरे मौला बुला लो मदीना मुझे (सफ़ा 13)

जब कि हकीकत यह है कि दुनिया के सारे मुसलमान मक्का मदीना को पवित्र समझ कर उस सर ज़मीन से बे इंतहा प्यार करते हैं और उसकी ज़ियारत (दर्शन) की दिन रात तमन्ना करते हैं यह सिर्फ हिन्दुस्तानी मुसलमानों की भावना नहीं है और न ही शुद्धि आंदोलन से इसका कोई संबंध है। दुनिया के सारे मुसलमान हर जगह और हर वक्त यही सोचते हैं कि वह मक्का व मदीना की पाक धरती पर कब पहुंच जायें और इनका दर्शन कर लें।

मक्का मदीना से मुसलमानों की मुहब्बत को संघ परिवार सख्त नापसंद करते हुए उसे देश प्रेम के खिलाफ़ समझता है। लेकिन अयोध्या व काशी व मथुरा व हरिद्वार ऋषिकेश और त्रिरूपति इत्यादि से दूसरे देश के हिन्दुओं की मुहब्बत और यहां आबाद होने की इच्छा को बड़ी पसंदीदा नज़र से देखता है और उसकी तारीफ़ करता है। अतएव उपाध्याय जी कहते हैं :

“जब भारत के बाहर केनिया, जंजीबार, बर्मा आदि देशों में हिन्दुओं का उत्थीपन प्रारम्भ हुआ, तब वहां का हिन्दू यदि कहीं जाने की सोचता था तो वह केवल भारत देश में ही। इस तरह हिन्दू का स्वाभाविक प्रेम

भारत की ओर है।" (पेज 14)

अभी जनवरी 2003 में अप्रवासी हिन्दुस्तानियों को एक तीन दिवसीय प्रोग्राम "परवासी समान दीवस" (नई दिल्ली) में हुकूमती सतह पर सम्मान दिया गया। और इंग्लैंड के एक भारतीय मूल के मिस्टर ढोलकिया ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि "हम इंग्लैंड के शहरी हैं मगर भारत का प्यार हमारे सीने में इसी तरह समाया हुआ है जैसे हनुमान जी के सीने में राम और सीता का नक्शा बना हुआ था और उन्होंने अपना सीना चीरकर दिखा दिया था" वहां मौजूद सदस्यों ने इस भावना का पुरजोश और जबरदस्त स्वागत किया और उप प्रधानमंत्री आडवाणी ने ढोलकिया के इस ब्यान को बेहद सराहा। मीडिया में इसका खूब चर्चा भी हुआ।

इस अवसर पर नादरा नायपाल (नॉबेल पुरस्कृत नायपाल की पत्नी) के इस सवाल पर श्री आडवाणी वगैरह बगलें झांकने लगे कि अप्रवासी हिन्दुस्तानी मुसलमान अपने सीने में राम और सीता का नक्शा कैसे दिखा सकते हैं? और वह नहीं दिखा सकते तो क्या उन्हें हिन्दुस्तान दोस्त नहीं समझा जा सकता?

दुनिया की किसी भी चीज़ की पूजा करना किसी हिन्दु के लिये बहुत आसान बात है। इसीलिये ज़मीन, दरया, पहाड़, वृक्ष, जानवर, पत्थर, चांद सूरज, सितारे और अपने पूर्वजों की पूजा इसकी परंपरा है। वह जब जिसे चाहता है पूज लेता है इसीलिये वह "भूमिपूजन" (ज़मीन की पूजा) "वंदे मातरम" (मां की पूजा) "सरस्वती वंदना" (देवी की पूजा) और इसी नीयत से "भारत माता" और "मात्र भूमि" की जय जयकार करता है। उपाध्याय जी को शिकायत है कि हम मुसलमानों से कहते हैं कि इस धरती को भारत माता कहो तो वह उसे नहीं मानता। (पृष्ठ 10) वह जिन चीज़ों को पूजने के लायक समझता है वह भारत से बाहर की चीज़ें हैं। (पृष्ठ 13) और फिर उपाध्याय जी कहते हैं कि हिन्दु जिस तरह अपने अवतारों की पूजा करते हैं उसी तरह मुसलमान अपने मुहम्मद की पूजा करें तो हमें कोई ऐतराज नहीं। (पेज 7)

इस्लाम का स्वभाव इसकी आत्मा इसकी शिक्षा और इसका हुक्म समझे बगैर यह बातें कही गई हैं। मुसलमान सिर्फ अल्लाह की इबादत व परस्तिश और पूजा करता है वह किसी छोटे बड़े इंसान व हैवान और ज़मीन व आसमान की किसी चीज़ की न कभी पूजा करता है और न कर

सकता है। इस्लाम का सारा लिटरेचर और मुसलमानों का पूरा इतिहास इसका गवाह है कि एक पल के लिये भी उसके यहां किसी गैर अल्लाह की इबादत व पूजा की कोई गुंजाइश नहीं रही है।

दिल से इंसान जिससे संबंध रखता है उसके साथ मुहब्बत भी रखता है जैसे माता पिता व औलाद व दोस्त व रिश्तेदार। और आदर भी करता है जैसे गुरु व उपकारी व संरक्षक व ज्ञानी। और हर मुसलमान इबादत व पूजा सिर्फ अपने अल्लाह की करता है। इसलिये इस वास्तविकता को अच्छी तरह समझ लेने की ज़रूरत है कि मुसलमान किसी व्यक्ति किसी ज़मीन से मुहब्बत तो करता है मगर उसकी इबादत व पूजा किसी कीमत पर नहीं कर सकता है।

मुसलमान मक्का व मदीना से मुहब्बत रखता है, हज़रत आदम से हज़रत ईसा तक जितने पैग़म्बर दुनिया में आये सबसे मुहब्बत रखता है और उनका आदर व सम्मान करता है। इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत उसके दिल में सारे इंसानों और सारे पैग़म्बरों से ज़्यादा है, उनका आदर एवं सम्मान उसका ईमान है, कुरआन को मुसलमान दिल व जान से चाहता है और उसे पवित्र आसमानी किताब समझता है, मस्जिदे हराम, (ख़ाना-ए-काबा), मस्जिद नबवी और मस्जिद अक़सा (बैतुल मुक़द्दस) के अंदर नमाज़ पढ़ने को वह दुनिया की सभी मस्जिदों से ज़्यादा सवाब व बर्क़त का सबब समझता है।

इस मुहब्बत व सम्मान के बावजूद अगर कोई मुसलमान एक मिनट के लिये भी उपरोक्त पैग़म्बरों या पवित्र स्थलों में से किसी की इबादत व पूजा करले तो वह ईमान व इस्लाम से ख़ारिज हो जायेगा। बल्कि अगर इबादत व पूजा न करे और सिर्फ एक मिनट के लिये भी यह विश्वास अपने दिल में जमा ले कि इनमें से किसी की इबादत व पूजा करना जायज़ (उचित) है तब भी उसका ईमान व इस्लाम समाप्त हो जायेगा। एक मिनट तो ज़्यादा होता है चंद सैकेंड के लिये भी ऐसा विश्वास उसके दिल में पैदा हो जाये तो यह शिर्क (अल्लाह के किसी गुण और काम में दूसरे को शरीक समझना) है और शिर्क इस्लाम की नज़र में कुफ़्र से भी बदतर है अल्लाह की तौहीद (अल्लाह को एक मानना) में शिर्क करना, उसकी ज़ात या गुण में किसी मख़लूक को शामिल समझना ईमान व इस्लाम के बिल्कुल विरुद्ध है और जिन बातों में शिर्क की

मिलावट हा उनसे भी मुसलमान हनशा दूर रहता है।

अब बताया जाये कि हिन्दु "भारत माता की जय" और "वंदे मातरम" के अंदर धरती की पूजा की श्रद्धा रखते हैं या नहीं? और जब धरती की पूजा की श्रद्धा रखते हैं तो फिर ऐसी मांग मुसलमानों से क्यों करते हैं जो उनके ईमान व इस्लाम के खिलाफ है? मुसलमान हिन्दुस्तान व पाकिस्तान व चीन व जापान व बर्तानिया, अमरीका, मिस्र, शाम, ईरान, इराक किसी धरती की पूजा नहीं करते। यहां तक कि अपनी सबसे पवित्र व पावन धरती मक्का व मदीना को भी पूजा कभी नहीं कर सकते।

अपने वतन से मुहब्बत रखना अलग चीज है और उसकी पूजा करना अलग चीज है। बेटा अपने बाप और मां से मुहब्बत रखता है मगर उनकी पूजा नहीं करता है। तो क्या कोई जाहिल से जाहिल और नादान से नादान व्यक्ति भी यह कह सकता है कि बेटा को मां-बाप से मुहब्बत नहीं है?

हिन्दुस्तान हमारा वतन है। इसके मिट्टी और आब व हवा से हमें मुहब्बत है। यहीं हमें जीना और मरना है। इसकी शोहरत व नेक नामी व तरक्की हमें प्यारी है। इसकी मर्यादा व ताकत में बढ़ोत्तरी करना और इसकी सरहदों की हिफाजत करना हमारा कर्तव्य है। इसके अलावा हमें कुछ समझने कहने और कुछ करने की कदापि कोई ज़रूरत नहीं। हिन्दुस्तान! जिन्दाबाद। पाइन्दाबाद।

संघ परिवार जो हिन्दुस्तानी मुसलमानों की अधीनता व गुलामी का इच्छुक है उन्हें दबाने कुचलने के लिये फ़ितना व फ़साद बरपा करता रहता है। उनके विरुद्ध दोषारोपण करता है। अफ़वाह फैलाता है। इस्लाम दुश्मनी तथा मुस्लिम दुश्मनी पर तैयार रहता है। उसे अपने विचार व दृष्टिकोण पर पुनः विचार करना चाहिये। अपने व्यवहार में सुधार करना चाहिये। इसी में हिन्दुस्तान की बेहतरी व भलाई है। इसी से देश मजबूत होकर तरक्की करेगा और इसे दुनिया भर में नेकनामी मिलेगी। इक्कीसवीं सदी ईसवी का यही संदेश और हिन्दुस्तानी हित की यही मांग है। इसी के मुताबिक चलकर अमन व शांति का देश के अंदर दौर दौरा होगा। अमन पसंदी व इंसानियत दोस्ती का बोल वाला होगा। और हिन्दुस्तान जन्नत निशान बन सकेगा।

“हिन्दुत्व” और “सांस्कृतिक राष्ट्रीयता” की आतिशबाजी

आज कल “हिन्दुत्व” के साथ “सांस्कृतिक राष्ट्रीयता” (कल्चरल नैशनलिज़्म, तहजीबी कौम परस्ती) का चर्चा मीडिया में इस तरह हो रहा है जैसे यह दोनों (हिन्दुत्व एवं सांस्कृतिक राष्ट्रीयता) जुड़वा बहन हैं। आर.एस.एस. लॉबी इस मोर्चा पर अपना सारा जोर लगा रही है कि इस हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता को हिन्दुस्तानियत व सेक्यूलरिज़्म की रूह (आत्मा) करार दिया जाये। देश प्रेम का इन्हें ही पैमाना बना दिया जाये। और इनके विरुद्ध बोलने वालों को हिन्दुस्तानी समाज में इस तरह अपमानित कर दिया जाये कि वह अपनी नज़र में स्वयं ही मुजरिम बन जायें और देर सवेर उन्हें भी हिन्दुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रीयता (नैशनल कल्चरिज़्म, तहजीबी कौम परस्ती) का राग अलापने पर मजबूर कर दिया जाये। जब कि हिन्दुस्तान में हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी, बुद्ध इत्यादि सदियों से आबाद हैं। और इन सब की अलग अलग संस्कृति है इनका अपना आस्तित्व अपनी पहचान और अपना तर्ज ज़िन्दगी (way of life) है। व्यवहारिक, पारंपरिक तथा कानूनी सतह पर इन्हें अब तक इसकी पूरी आज़ादी भी है कि वह अपने दीन धर्म अपनी तहजीब व कल्चर और अपने रहन-सहन, लिबास और अपने पसंद के किसी भी काम और किसी भी मामले में दूसरे के पाबंद नहीं। लेकिन संघ परिवार (आर.एस.एस, भाजपा व विश्व हिन्दु परिषद) को यह सब बातें बुरी तरह खटक रही हैं। वह ताक़त के द्वारा हिन्दुत्व को थोपना चाहता है। प्राचीन हिन्दु संस्कृति को सांस्कृतिक राष्ट्रीयता (तहजीबी कौम परस्ती) के नाम पर सारे हिन्दुस्तानियों के ऊपर जबरन लागू करने पर उतारू है। हिन्दु भावना को उभार कर हर आबादी व शहर में नफ़रत की आग भड़काना वह अपना धार्मिक कर्तव्य समझ रहा है और इसके लिये दिन रात उत्तेजित हरकतें करने में व्यस्त है।

बड़ी होशियारी व महारत से संघ परिवार सेक्यूलरिज़्म और कल्चरल नैशनलिज़्म को आमने सामने खड़ा करके सेक्यूलरिज़्म को मात देने की शतरंजी चालें चल रहा है इस वक़्त रंगा रंगा सांस्कृतिक देश उसके अपने सांस्कृतिक आतंकवाद के निशाने पर है। और सेक्यूलरिज़्म की समर्थक राजनीतिक पार्टियां जाने अन जाने तौर पर बुरी तरह गच्चा खा रही हैं। वह इसके जाल में फंसते हुए नरम हिन्दु बनकर इसका मुकाबला करना चाह रही हैं। जिस से गर्म हिन्दुत्व की मंशा पूरी हो रही है और नरम हिन्दु आसानी के साथ इसका चारा बनते चले जा रहे हैं।

गुजरात इलेक्शन (दिसम्बर २००२) में नरेन्द्र मोदी व परवान तोगाड़िया ने "गर्म हिन्दुत्व" का प्रचार किया। और कांग्रेस "नर्म हिन्दुत्व" की समर्थक बन गई। वैसे आर.एस.एस. के एक थिंकर गोविन्द आचार्य कहते हैं कि हिन्दुत्व सिर्फ हिन्दुत्व है। नर्म हिन्दुत्व व गर्म हिन्दुत्व कोई चीज़ नहीं है। जब कि प्राइम मिनिस्टर अटल बिहारी वाजपेयी बड़ी चालाकी के साथ हिन्दुत्व तथा सेक्यूलरिज़्म एवं भारतीयता को एक जैसा समझने समझाने का रास्ता साफ़ कर रहे हैं।

कल्चरल नैशनलिज़्म (Cultural Nationalism) का यह भी मतलब है कि मल्टी नेशन (Multi Nation) या टू नेशन थ्योरी (Two Nation Theory) की बात पुरानी हो चुकी है। कांग्रेसी One Nation Theory कोई चीज़ नहीं, (जबकि वीरसावरकर के नज़दीक One Nation का मतलब सिर्फ़ हिन्दु कौम है।) अब तहज़ीबी कौम परस्ती (सांस्कृतिक राष्ट्रीयता) का दौर दौरा होगा, जो संघ परिवार का नारा है। कुछ साल पहले तक तो यह कहा जा रहा था कि "जो हिन्दु हित की बात करेगा वही देश पर राज करेगा।" और अब यह कहा जा रहा है कि हिन्दुत्व के खिलाफ़ जो बोलेगा उसकी उसे सज़ा भुगतनी पड़ेगी। और ज़ुरत यहां तक बढ़ चुकी है कि अगले दो साल तक हिन्दुस्तान को हिन्दु राष्ट्र बना देने का विश्व हिन्दु परिषद ने ऐलान कर दिया है, जिसे पागलपन के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता।

शब्द "हिन्द" "हिन्दु" और "हिन्दुस्तान" अरब व ईरान के लोगों ने सिर्फ़ भौगोलिक स्थिति को बतलाने के लिये प्रयोग किया था, और देश को हिन्द, हिन्दुस्तान और यहां रहने वालों को हिन्दु और हनूद कहा गया। हिन्दुमत व हिन्दु धर्म व हिन्दु इज़्म का मायने हिन्दु शब्द में पहले कभी शामिल नहीं समझा गया। ग्यारहवीं सदी ईसवी या इसके बाद ही हिन्दु शब्द हिन्दु धर्म के मानने वालों के मायने में इस्तेमाल किया गया।

और हिन्दुत्व की आत्मा व स्वभाव हालांकि पुरानी है मगर एक प्रतीक शब्द और उसके अंदर फ़ासिस्ट मानसिकता की उपज अभी कुछ साल पहले संघ परिवार के द्वारा हुई। श्री सूर्या नारायण जो आर.एस.एस. के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख रह चुके हैं वह अपने एक लेख "The concept of the Hindu Rashtra" में लिखते हैं।

What are the factors that have kept this nation as one inspite of the foreign domination for over one thousand years, it is its faith in its age, old culture, dharma, tradition and its forefathers like Rishis, Acharyas, Sri Ram and Shri Krishna. All this can be condensed into

one word and that is the Hinduness, Hundutva (Why Hindu Rashtra? Suruchi Prakashan, New Delhi, 1990)

अर्थात् हजार वर्षों से अधिक विदेशी शासन के बावजूद जिन कारणों ने इस राष्ट्र को एक रखा वह यह हैं प्राचीन सभ्यता, धर्म, परंपरा और अपने पूर्वज जैसे ऋषियों आचार्यों, श्री राम, श्री कृष्ण पर भरोसा व विश्वास। इन सब को जिसे एक शब्द में समेटा जा सकता है वह है हिन्दुपन, हिन्दुत्व।

यही वह बुनियादी दृष्टिकोण है जिसको फैलाने के लिये केशूबली राम हेडगवार, वीरसावरकर, गुरु गोलवालकर और दीन दयाल उपाध्याय, श्यामया प्रसाद मुखर्जी इत्यादि ने जिन्दगी भर कोशिश की, और इसी का झंडा संघ परिवार ने उठा रखा है। हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की सफलता के आसार इस परिवार के सामने हैं। और खुल कर आजकल पूरी ताकत के साथ इस के नारे बुलंद किये जा रहे हैं।

आर.एस.एस. दृष्टिकोण को सियासी ताकत बनाने के लिये 1951 ई. में "जनसंघ" की बुनियाद डाली गई। जिसकी मुस्लिम दुश्मनी देश भर में विख्यात थी। 1977 ई. में वह सेंटर के बहुमत में आने के लिये "जनता पार्टी" में मिल गई। फिर उसके सैद्धांतिक प्रचारक अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी ने दोहरी सदस्यता के सवाल पर जनसंघ के पुराने लीडरों और वर्करों को साथ लेकर 1980 ई. में भारतीय जनता पार्टी की बुनियाद डाली। और आज कल दो दर्जन छोटी छोटी कई सियासी पार्टियों को लेकर वह सेंटर पर विराजमान हैं। जनसंघ से भाजपा तक का राजनीतिक इतिहास यह बताता है कि माध्यम व स्रोत बहस के योग्य नहीं, मकसद और निशाने तक पहुंचना ही असल है। अय्यारी व मक्कारी का हर रूप धारण करके हुकूमत की कुर्सी पर कब्जा करना और फिर अपने दृष्टिकोण व सोच के अनुसार काम करना इस का असल निशाना है जो इस समय हिन्दुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के नाम से राजनीति व मीडिया में विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है।

समर्थन व विरोध दोनों का सिलसिला जोर व शोर के साथ जारी है। मौजूदा हालात और गुजरात की मुस्लिम नस्ल कुशी के बैक ग्राउंड में सेक्यूलरिज़्म और कल्चरल नैशनलिज़्म के दो अलग अलग विचार नीचे दर्ज किये जा रहे हैं।

"अंतिम चेतावनी" शीर्षक से परवीन तोगड़िया जनरल सेक्रेट्री विश्व हिन्दु परिषद अपने एक लेख में अपना विचार व्यक्त करते हैं :

“धर्मनिरपेक्षतावादी भीडिया गुजरात के मामले में बेहद गलत साबित हुआ, उसने नरेंद्र मोदी को खलनायक के रूप में पेश किया, पर लोगों ने उन्हें नायक माना, धर्मनिरपेक्ष भीडिया को इस पर जरूर सोचना चाहिये, क्या वह भारत को समझता भी है? पश्चिमी राष्ट्र एकधुवीय हैं उन्हें राज्य व्यवस्था चलाती है। यदि राज्य व्यवस्था बदल जाती है तो राजनैतिक तंत्र और समाज भी बदल जाता है। भारत बहुधुवीय है “यहां राज्य व्यवस्था है, धर्म है, जाति है, हिन्दु भावनाओं का उपहास उड़ाकर, धार्मिक अपील की अनदेखी करके न तो राजनीति और न उसकी खबर ली जा सकती है।”

कांग्रेस के लिए गुजरात अंतिम चेतावनी है। वह भारत की आत्मा से पुनः तार जोड़ ले वरना खत्म हो जायेगी। हिन्दुत्व की लहर रोकी नहीं जा सकती। इन चुनावों ने हमारे राष्ट्रीय राजनैतिक तंत्र के लिये रास्ता तैयार कर दिया है। जिससे वह हमारी सेना के पीछे खड़ा हो सके। जब ऐसा हो जायेगा तो ऑपरेशन पराक्रम का अंत वैसा नहीं होगा, जैसा हुआ। उसका अंत वैसे ही होगा जैसे होना चाहिये—पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में। (इंडिया टुडे विक्ली हिन्दी, नई दिल्ली, 1 जनवरी 2003)

“अगला निशाना” के शीर्षक से भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह लिखते हैं:

आज हिन्दुत्व के नाम पर हर तरह की खाई पैदा की जा रही है, हिन्दु धर्म में नया वर्गीकरण किया जा रहा है। यह खुद हिंदूमत पर सबसे बड़ा सांस्कृतिक हमला है। प्रत्येक हिन्दु को यह समझ लेना चाहिये। संघ परिवार हिन्दुत्व के वास्तविक सारतत्व से जुड़े या हिन्दु समाज के सुधार के मुद्दे कभी नहीं उठाता। उसका हिन्दुत्व केवल यह है। “हिंदु समाज को वोट बैंक के रूप में मजबूत करो और इसमें घृणा को मुख्य हथियार बनाओ।” और वह यह सब कैसे करता है? यह राग अलापकर कि “हम हिंदू इस देश में बहुसंख्यक होने के बावजूद लगातार खतरे में हैं।”

हमें इससे सीधे निबटना होगा। हमें जनता को शिक्षित करना होगा कि इस दुष्प्रचार के परिणाम क्या होंगे और देश पर इसका क्या असर होगा। दूसरे हमें जनता को प्रभावित करने वाले आर्थिक और असली मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिये रणनीति बनानी होगी। अगर विपक्ष इन मुद्दों को सफलतापूर्वक उठा सका तो हिंदुत्व की ताकतें पीछे हटने को मजबूर होंगी। जहां भी ठोस मुद्दे सामने आये हैं उनकी हार हुई है। सिर्फ राजनैतिक दलों को ही नहीं बल्कि जनमत को प्रभावित करने वाले

प्रेस-गुजरात दंगों के दौरान राष्ट्रीय प्रेस ने सराहनीय काम किया—और लेखकों को भी आगे आकर अपने विचार व्यक्त करने चाहिये।

लेकिन मेरा मानना है कि भाजपा अंततः कामयाब नहीं होगी। वह कुछ समय के लिए घृणा का अपना हथियार इस्तेमाल करके सत्ता में बनी रह सकती है क्योंकि नफरत बहुत शक्तिशाली भावना है। (इंडिया टुडे, विकली हिन्दी, नई दिल्ली, 1 जनवरी 2003)

तोगाड़िया की फ़ाशिस्ट मानसिकता व उत्तेजना मशहूर है। मुस्लिम दुश्मनी में वह अंधे हो चुके हैं। सेक्यूलर मीडिया पर उन्होंने जमकर हमला करते हुए गुजरात के ज़ालिम मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की वकालत की है। गुजरात इलेक्शन (दिसम्बर 2002) को सेक्यूलर ताकतों के लिये आख़री वार्निंग कहते हुए इन्हें संभल जाने की धमकी दी है। भारत की आत्मा (यानी हिंदुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रीयता) से रिश्ता जोड़ने की हिदायत दी है। हिंदुत्व की लहर इन के नज़दीक देहली तक पहुँचने के लिये बेकरार है जो पश्चिमी उत्तरी सरहदों तक पहुँच कर अपने जंगी जुनून का प्रदर्शन करेगी।

वी.पी. सिंह भूतपूर्व प्रधानमंत्री कहते हैं कि हिंदुत्व स्वयं हिन्दु धर्म पर एक संगीन हमला है। संघ परिवार का हिंदुत्व हिन्दु समाज को अपना वोट बैंक बनाना चाहता है। इसका काम सिर्फ़ यह है कि हिन्दुओं के दिलों में नफरत पैदा की जाये और यह डर भी पैदा किया जाये कि बहुमत में होते हुए भी हिन्दु धर्म ख़तरे में है। इस तर्कीब से कुछ दिन तक हुकूमत की जा सकती है लेकिन चंद साल बाद घृणा का यह हथियार कुंद हो जायेगा।

वी.पी. सिंह स्वयं भाजपा की बाहरी मदद से 1989 ई. में प्रधानमंत्री बने थे। लेकिन अब वह उस पर शरमिन्दा हैं। और अपना जुर्म स्वीकार करते हुए कई बार यह ब्यान दे चुके हैं कि भाजपा के समर्थन से प्रधामंत्री बनना मेरी सियासी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी और भयानक ग़लती थी।

गुजरात के असेम्बली इलेक्शन में भाजपा को कामयाबी मिली है। 12 दिसंबर को इलेक्शन और 15 दिसंबर को इसके नतीजे का ऐलान हुआ जिसके बाद से संघ परिवार अब तक जश्न मना रहा है। 1990 में लाल कृष्ण आडवाणी की रथयात्रा के इंचार्ज नरेन्द्र मोदी ने फ़रवरी मार्च 2002 की मुस्लिम नस्लकुशी की खुशी में 8 सितंबर से गौरव यात्रा शुरू की और उसे पूरे गुजरात में घुमाया।

27 फरवरी का गोधरा ट्रेन हादसा एक संगीन जुर्म था। जिसकी पूरे मुल्क और मुस्लिम समाज ने सख्त आलोचना की। 28 फरवरी की सुबह बल्कि 27 की रात ही से मुस्लिम नरसंहार का सिलसिला स्टेट गर्वमेंट की निगरानी में अपने चरमसीमा को पहुंच गया था। मगर पूरा देश उस समय चौंक गया जब इलेक्शन जीतने के बाद प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बिना ज़रूरत व बिना किसी कारण के यह ब्यान दे डाला कि अगर मुसलमानों ने गोधरा कांड की समय पर और बड़े पैमाने पर आलोचना कर दी होती तो बाद में होने वाला गुजरात दंगा इतना भयानक रूप धारण न करता। उनके इस ब्यान के विश्लेषण की आवश्यकता नहीं। लोगों ने खुलकर अपने इस विचार को अखबारों के माध्यम से व्यक्त किया कि अब वाजपेयी भी मोदी और तोगड़िया की ज़बान बोल रहे हैं जिनकी ज़बान व ख्याल का एक ताज़ा नमूना यह है :
पूणे (महाराष्ट्र) 25 दिसंबर (पी.टी.आई.)

विश्व हिन्दु परिषद के जनरल सेक्रेट्री परवीन तोगड़िया ने यहां एक प्रेस कांफ्रेंस में यह ब्यान दिया कि जहां तक हिन्दुत्व का सवाल है उस पर कोई समझौता नहीं हो सकता। हमारी नीयत और नीति दोनों एक हैं और अटल। हमें यह कहने में कोई शर्म नहीं कि विश्व हिन्दु परिषद ने दीन दयाल, उपाध्याय और श्यामा प्रशाद मुखर्जी के दृष्टिकोण पर प्रयोग किया और गुजरात में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के इस ब्यान पर कि हिन्दुस्तान पहले ही से हिन्दु राष्ट्र है। उन्होंने ने कहा कि इसके लिये वह वाजपेयी के आभारी हैं। मगर व्यवहारिक रूप में हिन्दुस्तान उस समय हिन्दु राष्ट्र बनेगा जब विश्व हिन्दु परिषद के दृष्टिकोण और पालीसियों को पूरी तरह देश में लागू कर दिया जाये।

(26 दिसंबर के समाचारपत्र)

जबकि 23-24 दिसंबर 2002 को भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समीति की बैठक जो दिल्ली में हुई। इस मीटिंग में संबोधित करते हुए वाजपेयी ने कहा कि हिन्दुत्व एक तर्ज ज़िन्दगी (way of life) है। हिन्दुत्व किसी इलेक्शन का इशू नहीं बन सकता। यह देश बहुसंख्यक देश है। इस दृष्टि से देखा जाये तो यह हजारों साल से हिन्दु राष्ट्र है। तो फिर इसे हिन्दु राष्ट्र बनाने की बात क्यों कही जा रही है? (24 दिसम्बर)

और 24 दिसम्बर की इसी मीटिंग में उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी ने यह धमकी दी कि आम तौर पर यह कहा जा रहा है कि हम

हिन्दुत्व की वजह से गुजरात में जीते हैं। लेकिन हमारे आलोचकों को समझ लेना चाहिये कि अगर उन्होंने हिन्दुत्व की आलोचना जारी रखी तो इन्हें इस का परिणाम भुगतना पड़ेगा।

इसी मीटिंग में भाजपा ने कहा कि गुजरात के इलेक्शन ने मुल्क की सियासी तारीख को एक नया मोड़ दिया है। और आशा व्यक्त की कि सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का भाजपाई दृष्टिकोण सारे देश में स्वीकार किया जाये।

भाजपा अध्यक्ष वेंकया नायडू ने यह इस फैसला का एलान किया कि पूरे देश में गुजरात फार्मूला दोहराया जायेगा। गुजरात ने रास्ता दिखाया है कि नकली सेक्यूलरिज्म पर विजय हासिल की जा सकती है। हिन्दुस्तानी जनता न तो अल्पसंख्यकों की मुंह भराई और न हिन्दुओं की बेइज्जती सहन करेगी।

28 दिसम्बर को पूणे (महाराष्ट्र) में विश्व हिन्दु परिषद ने भविष्य के अपने प्रोग्राम का ऐलान करते हुए मांग की है कि 22 फरवरी 2003 तक विवादित 67.5 एकड़ ज़मीन राम जन्म भूमि न्यास (अयोध्या) के हवाला कर दी जाये वरना हुकूमत से टकराव की नौबत आ सकती है। अब हिन्दु जनता न ज़्यादा इंतज़ार कर सकती है और न ही अपनी बेइज्जती गवारा करेगी। उसे राम मंदिर का निर्माण करना है। और इसके लिये वह हर बलिदान देने को तैयार है।

फरवरी व मार्च 2002 के गुजरात कांड की न्यायिक जांच की जाये तो यह नतीजा निकलना स्वाभाविक है कि राम जन्म भूमि के नाम पर पहले पूरे माहौल को गर्म किया गया क्योंकि उस समय भाजपा गुजरात के अंदर मुसलसल पराजय का शिकार हो रही थी फिर गुजरात से अयोध्या तक हज़ारों गुजराती कारसेवकों को माहौल गर्माने और भड़काऊ नारे लगाने और हिन्दु मुस्लिम नफरत फैलाने की मुहिम पर लगाया गया। दाढ़ी और बुरका के साथ छेड़ छाड़ करते कराते रहस्मय रूप से गोधरा ट्रेन कांड सामने आया। ट्रेन की बोगी नंबर 6 जिसको पूरे तौर पर जला दिया गया था और अख़बारात के मुताबिक 58 मुसाफिर इसके अंदर जल मरे थे उनकी लिस्ट रेलवे ने न जाने किन कारणों से अभी तक जारी नहीं की। जनता की मांग के बावजूद इस लिस्ट से पर्दा नहीं उठाया जा रहा है। फिर प्रतिक्रिया के नाम पर गुजरात भर में मुसलमानों के खून से होली खेली गई। जिसपर मुल्क के अंदर और बाहरी देशों में भी कठोर आलोचना हुई। और समझा गया कि क्रिया और प्रतिक्रिया सब

एक ही सिलसिले की कड़ियां हैं। और यह प्रतिक्रिया नहीं बल्कि एक खूनी व हिटलरी तर्जुबा है कि इस तरह इलेक्शन जीतने में कितनी कामयाबी हासिल की जा सकती है? और नतीजे के ऐतवार से स्थायी रूप से हिन्दुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का यह तर्जुबा सफल हुआ। गुजराती हिन्दु जनता के दिलों में मुसलमानों के खिलाफ इतनी नफरत भर दी गई कि असेम्बली इलेक्शन में उसे लोगों के अंदाज़ा से ज़्यादा सीटें मिल गई। यही है वह "गुजरात फार्मूला" जिस पर पूरे मुल्क में अमल करने और उसे दोहराने की भाजपा ने तैयारी कर रखी है।

लंबी मंसूबा बंदी और इंतज़ार को छोड़कर फ़ाशिज़्म और हटधर्मी पर संघ परिवार ने अपने आप को अमादा कर लिया है। हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के जिन दृष्टिकोणों का दीन दयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बीज बोकर उन्हें परवान चढ़ाया था अब उनकी फसल काटने के लिये संघ परिवार बेचैन और बे करार है। संगठित तौर पर हिन्दुत्व को राष्ट्रीयता का रूप 1925 में उस समय दिया गया जब "हिन्दु" स्वयं सेवक संघ की "राष्ट्रीय" स्वयं सेवक संघ के नाम से बुनियाद डाली गई। और हिन्दुत्व को राष्ट्रीयता का नाम देने पर अब काफी बल दिया जा रहा है।

भारतीयता का इस्तेमाल भी इसी मायने में किया जा रहा है। जिस गुजरात कांड को वाजपेयी ने शर्मनाक और कलंक का टीका कहा था और आडवाणी ने जिसकी बार बार निंदा की थी। अब इसी बुनियाद पर संघ परिवार अपनी अगली चुनावी योजना बना रहा है। हालांकि इलेक्शन में हार जीत होती रहती है गुजरात की कामयाबी कोई बहुत ज़्यादा नहीं है, जिस पर संघ परिवार फूले नहीं समा रहा है, और पूरे मुल्क को हिन्दु राष्ट्र बना देने का सपना देख रहा है। कामयाबी भी भाजपा को उन्हीं गुजराती इलाकों में मिली जहां उसने ज़्यादा मुस्लिम नरसंहार कराया। इलाका कच्छ और सोराष्ट्र में उसे असफलता हाथ आई। सिर्फ़ तेरह दंगा पीड़ित जिलों की एक सौ दो सीटों में से 79 सीटों पर भाजपा को ज़्यादा कामयाबी मिली। यानी नफरत व फ़साद ही भाजपा का असल सरमाया और उसकी कामयाबी की बुनियाद है। और यह भी एक हकीकत है कि इलेक्शन के बाद मुक़दमा पकड़ धकड़ और सज़ा से बचने के लिये दंगापीड़ित क्षेत्रों के बहुत से मुजरिमों ने भाजपा के हित में सरगर्म प्रचार किया। और अपने जुर्म को छुपाने का सियासी इंतज़ाम कर लिया।

हत्या व गार काट के अलावा नरेन्द्र मोदी की भड़काव मुहिम में यह दो बातें विशेष रूप से शामिल थीं।

(1) पाकिस्तान और "मियां मुशर्रफ़" का मोदी ने बार बार नाम लेकर जनता को खूब भड़काया। और जगह जगह ब्यान दिया कि हम गुजरात को कश्मीर नहीं बनने देंगे। असेम्बली इलेक्शन में क्षेत्रीय हालात व मामलात पर चर्चा होती है मगर भाजपा ने यह इलेक्शन ऐसा बना दिया जैसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में अब जंग छिड़ने वाली है। सारे हिन्दुस्तानियों को एक होकर उसका मुकाबला करना चाहिये और यह मुकाबला भाजपा के नेतृत्व ही में हो सकता है। इसके लिये उस ने बार बार आई.एस.आई. मियां मुशर्रफ़ और पाकिस्तान का नाम उछाला ताकि हिन्दुओं की भावना बुरी तरह भड़काई जा सके।

टीवी चैनल "आज तक" की सीधी बात में श्री प्रभु चावला को इंटरव्यू देते हुए मोदी ने बातचीत के शुरू ही में कहा कि आप जिन्ना का नाम न लें। यह नाम लेना महापाप है। लेकिन अपनी चुनावी सभाओं में बार बार मियां मुशर्रफ़ मियां मुशर्रफ़ कह कर मोदी ने मालूम नहीं कितना पुण्य कमाया? यह सवाल उससे अभी तक किसी ने नहीं किया है।

(2) अहमदाबाद गुजरात के दो एक उलेमा ने अपने एक सियासी ब्यान में भाजपा के खिलाफ़ वोट देने की अपील की थी। जिसको स्वयं भाजपा ने बड़े पैमाने पर मीडिया और पब्लिक में फैलाया, और फिर उसके खिलाफ़ मुहिम छेड़ दिया कि "फ़तवा पॉलिटिक्स" भारत के लिये बहुत बड़ा खतरा है।

बरसों से इस तरह के सियासी बयानात के बारे में यह बतलाया जा रहा है कि यह फ़तवा नहीं बल्कि सियासी अपील है। जिस तरह हर हिन्दुस्तानी को वोट लेने और देने का मौलिक व क़ानूनी हक़ हासिल है वैसे ही हर हिन्दुस्तानी को ब्यान व अपील जारी करने का भी मौलिक व क़ानूनी हक़ हासिल है। जिसे समझ में आये उस पर अमल करे और जिसे समझ में न आए वह उस पर अमल न करे। हर व्यक्ति अपनी सियासी राय में आज़ाद व स्वतंत्र है। उसकी कोई धार्मिक हैसियत नहीं है कि इसे फ़तवा कहा जाये। यह सिर्फ़ एक ब्यान या अपील है इसे फ़तवा नहीं कहा जा सकता है। इसके बावजूद कुछ सियासी और मीडिया के लोग इसे फ़तवा कहने से बाज़ नहीं आते। ऐसी सूरत में इसे बदनीयती व शरारत के सिवा और क्या कहा जा सकता है? ज़्यादा से ज़्यादा किसी के सियासी ब्यान या अपील के बारे में यह कहा जा सकता

है कि ऐसा ब्यान या अपील मुनासिब है या नहीं?

गुजरात इलेक्शन के मौके पर सेक्यूलर कही जानी वाली पार्टियों ने भी आपसी मतभेद के जरिये भाजपा को काफी लाभ पहुंचाया। भाजपा ने खुलकर हिन्दुत्व कार्ड खेला और कांग्रेस ने ढके छुपे अंदाज में यही काम किया। सोनिया गांधी और कांग्रेस ने नर्म हिन्दु का रुख अपनाया। हिन्दुओं को अपनाने के लिये उसने अपनी चुनावी मुहिम का आरंभ मंदिर से किया, गांधी नेहरू का नाम लेने से परहेज करते हुए सरदार पटेल का नाम ज्यादा उछाला। मुस्लिम लीडरों को चुनावी मुहिम से दूर रखा। 182 में से सिर्फ 5 असेम्बली टिकट मुस्लिम उम्मीदवारों को दिया जब कि इससे पहले 1998 के असेम्बली इलेक्शन में कांग्रेस ने 15 टिकट मुस्लिम उम्मीदवारों को दिये थे।

सोनिया गांधी का इटालियन और क्रिश्चियन होना कांग्रेस की एक बड़ी कमजोरी और उसके खिलाफ भाजपा का एक बहुत बड़ा हथियार माना जा रहा है। क्रिश्चियन होते हुए कभी संगम प्रयाग कभी अम्बा मंदिर कभी कहीं हाजिरी देते रहना भी सोनिया के लिये सियासी तौर पर नुकसानदेह साबित हो रहा है। बहुत से सियासी लोगों का कहना है कि इस तरीके को छोड़कर अगर सोनिया यह ऐलान कर दें कि मैं न प्राईम मिनिस्टर की दावेदार हूं और न कभी हिन्दुस्तान की प्राईम मिनीस्टर बनूंगी तो इनका सियासी कद बढ़ जायेगा और आज की कांग्रेस में उनकी हैसियत गांधी जैसी हो जायेगी। हो सकता है कि देर सवेर उन्हें ऐसा ही करना भी पड़े।

वाजपेयी और आडवाणी के बारे में आम तौर पर कहा जाता है कि यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जब जहां जिस रूप की जरूरत पेश आती है उसे संघ परिवार सामने कर देता है। गुजरात इलेक्शन से पहले और बाद के चेहरे देखिये तो इस ख्याल की पुष्टि हो जाती है। नर्म व गर्म रूप सिर्फ सियासी नीति होती है मकसद दोनों का एक ही है मंजिल भी दोनों की एक ही है।

भाजपा लीडर हिन्दु देश, हिन्दु राष्ट्र, हिन्दु कंट्री हिन्दु स्टेट कहीं कुछ कभी कुछ कह रहे हैं। कहना सब यही चाह रहे हैं कि अब हिन्दुत्व व सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की बाढ़ आ जायेगी। और मुसलमानों को हमारी दया-दृष्टि पर रहना होगा।

एक तरफ मुसलमानों के खिलाफ नफरत का माहौल पैदा करके उनकी जिन्दगी अजीजन बनाई जाती है और दूसरी तरफ उनसे वोट की

अपील भी की जाती है। भाजपा का यह तरीका मुसलमानों को भड़काने और उन्हें दूर भगाने वाला है। उसका मकसद भी यही है कि मुसलमानों को दूर करके हिन्दु वोट हासिल किया जाये और हिन्दु वोट ही भाजपा का असल वोट बैंक बने। इसी दृष्टिकोण के गिर्द इस की सियासत का पहिया भी घूमता रहता है। मुसलमानों से वोट मांगना तो सिर्फ एक दिखावा है जिसकी कोई हकीकत नहीं।

आर.एस.एस. दृष्टिकोण को लागू करने वाली सियासी पार्टी भाजपा मुसलमानों से वोट किस मुंह से मांगती है? और मुसलमान उसे वोट दें भी तो क्यों दें? क्या हेडगवार सवारकर, गोलवालकर का हिन्दु राष्ट्र बनाने और अपनी अधीनता व गुलामी के दस्तावेज़ पर दस्तख़त करने के लिये मुसलमान भाजपा को वोट दें? और क्या अब "गुजरात फ़ार्मूला" को कामयाब बनाने के लिये मुसलमान भाजपा को वोट देकर अपने क़त्ल नामा पर दस्तख़त करें?

विश्व हिन्दु परिषद के फ़ायर ब्रांड लीडर परवीन तोगड़िया का ब्यान है कि मुल्क को हिन्दु राष्ट्र में बदलने का काम गुजरात से शुरू हो चुका है। विश्व हिन्दु परिषद गुजरात के तर्जुबा को मुल्क के हर कोने तक पहुंचायेगी। हमारा समर्थन सिर्फ़ उस सियासी पार्टी को मिलेगा जो हिन्दुत्व के हमारे उसूल पर हमारा साथ दे।

क्या गुजरात में धार्मिक उन्माद के नाम पर मोदी जैसे लोगों का दिया गया नारा हिन्दुत्व है? और क्या इस का अंजाम परवीन तोगड़िया का हिन्दु राष्ट्र है? जिसमें शकल व सूरत पहचान कर एक ही तरह के जुर्म की अलग अलग सज़ा दी जायेगी? मुल्क की बदकिस्मती यह है कि जिस गुजरात कांड को देख सुन कर वाजपेयी का सर शर्म से झुक गया था उस को अंजाम देने वाले मोदी मुख्यमंत्री शपथ समारोह (गांधी नगर गुजरात 22 दिसंबर) में बड़ी प्रसन्नता के साथ वें उपस्थित हुए।

मुस्लिम लाशों पर तांडव नाच करने और फ़ाशिज़्म के रथ पर सवार होकर इंसानियत व हिन्दुस्तानियत को रुसवा करने के लिये निकाली गई मोदी की गौरव यात्रा और तोगड़िया की विजय यात्रा गुजरात के बाहर शायद दूर तक न जा सके। दूसरे राज्यों के हालात बिल्कुल अलग हैं। वहां की समस्याएं भी कुछ दूसरी तरह की हैं। हर राज्य के वोटर्स का मिज़ाज व माहौल भी एक जैसा नहीं है। उनके सोचने समझने और ज़िन्दगी गुज़ारने का अंदाज़ भी अलग अलग है। इसलिये संघ परिवार को ज़्यादा खुश फ़हमी में पड़ना नहीं चाहिये।

समय का कारवां जल्द ही इसके जहरीले और धिनौने सफ़र का रास्ता रोक देगा। जैसा कि हिमाचल प्रदेश में भाजपा को बुरी तरह हार हुई है।

देश को शिक्षा, रोज़गार, नौकरी, स्वास्थ्य और अमन व अमान की ज़रूरत है। इंसानी जीवन की स्वाभाविक मांग कुछ दिनों बाद हिन्दुत्व के गुब्बारे की हवा निकाल देगी। हिन्दुस्तान को हिन्दुत्व की नहीं बल्कि पुर अमन माहौल की ज़रूरत है। डिक्टेटर शिप और हिटलर शाही की नहीं बल्कि लोकतंत्र की ज़रूरत है। संविधान बनाने वालों ने सेक्यूलरिज़्म को हिन्दुस्तान की एकता व अखंडता के लिये ज़रूरी करार दिया है। जिससे मुंह मोड़ने वाले स्वयं इस देश को अनारकी व निराज ही नहीं बल्कि अपने त्रिशूल से इसको खंड खंड कर रहे हैं।

1940 ई. में डाक्टर भीम राव अम्बेडकर की लिखी हुई किताब "पाकिस्तान एंड पार्टीशन ऑफ़ इंडिया" के नाम से छपी। जिसे 1990 ई. में महाराष्ट्र गवर्नमेंट ने भी छापा। फिर केन्द्र सरकार की डाक्टर अम्बेडकर प्रतिष्ठान ने भी 2000 ई० में इसका अनुवाद छापा है। इसके अंदर डाक्टर अम्बेडकर लिखते हैं :

"यदि सचमुच हिन्दु राज्य बन जाता है तो फिर इस देश के लिये भारी ख़तरा पैदा हो जायेगा। हिन्दु कुछ भी कहें पर आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के लिये एक ख़तरा है। इस बुनियाद पर "हिन्दुत्व" डेमोक्रेसी के बिल्कुल खिलाफ़ है। और हिन्दु राज्य को हर कीमत पर रोका जाना चाहिये।" (पेज 365)

शमा की रौशनी हालांकि कम होती है मगर देर तक रहती है। फुलझड़ी आंखों को चका चौंध करके मिन्टों सैकेंडों में अपने आप को खो बैठती है। यही हाल संघ परिवार के हिन्दुत्व और उसकी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का भी है। इसकी आतिश बाज़ी की उम्र बहुत सीमित और थोड़ी है। लोकतंत्र की शमां यहां रौशनी बिखेरती रहेगी। सेक्यूलरिज़्म की शमा को सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की आतिशबाज़ी से बुझाया नहीं जा सकता। विश्वास है कि हिन्दुत्व और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की यह आतिशबाज़ी जल्द ही ख़त्म हो जायेगी। और शांति, सुरक्षा तथा विकास का एक नया सूरज हिन्दुस्तान के आकाश से उभरेगा, जिसकी रौशनी हर कौम व मज़हब और हर जाति व कबीला के घर में उजाला फैलायेगी और अपना दायरा बढ़ाती चली जायेगी।



हमारी हिन्दी मतबूआत

1. सुन्नी बहिस्ती जेवर	मुफ्ती खलील अहमद बरकाती	100.00
2. जन्नती जेवर	मौलाना अब्दुलमुस्तफा आजमी	90.00
3. निजामे शरीअत	अल्लामा गुलाम जीलानी मेरठी	60.00
4. सवानेह हज़रत अवैस करनी	आमिर गीलानी	20.00
5. इस्लामी जिन्दगी	मुफ्ती अहमद यार खाँ नईमी	20.00
6. इस्लामी तालीम	अल्लामा मुस्ताक अहमद निजामी	20.00
7. हु कूके वालिदैनु	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
8. मज़ारात पर औरतों की हाज़िरी	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
9. तन्हीदे ईमान	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	15.00
10. अज़ाने क़ब्र	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	12.00
11. बारह माह की नफ़ल नमाज़ें	सय्यद शाह तुराबुल हक़ कादरी	15.00
12. सच्ची नमाज़ मअ नीयत नामा	अबुल कलाम अहसनुल कादरी	10.00
13. सच्ची नमाज़ मअ नीयत नामा (पॉकेट)	अबुल कलाम अहसनुल कादरी	8.00
14. मस्नून दुआयें (पॉकेट)	अबुलमुबीन नोमानी	8.00
15. ईसाले सवाब की शरई हैसियत	मुफ्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी	8.00
16. अंगूठे चूमने का मसला	मुफ्ती मुहम्मद शफ़ी ओकाड़वी	5.00
17. ज़ियारते कुबूर	मौलाना अब्दुल अज़ीज़ फ़तहपुरी	5.00
18. तरीक़े फ़ातिहा मअ सुदूत	मौलाना इलियास कादरी	5.00
19. तबलीगी जमाअत का फ़रेब	सय्यद शाह तुराबुल हक़ कादरी	5.00
20. तबलीगी जमाअ अहादीस की रौशनी में	अल्लामा अरशदुल कादरी	5.00
21. ग़हारे शबाब	अल्लामा अब्दुल अलीम मेरठी	8.00

नअतिया मजमूआ

1. हदाइके बख़्शिश	इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी	30.00
2. इन्तेखाये आला हज़रत	तरतीब अब्दुल मुबीन नोमानी	8.00
3. मौजे नूर	तरतीब मौलाना मक़सूद आलम रज़वी	10.00
4. बारिशे रहमत	हाफ़िज़ मुहम्मद कमरुद्दीन रज़वी	10.00
5. यादगारे बदर	यूसुफ़ रज़ा कादरी	8.00

राबते का पता:-

रज़वी किताब घर

425, मटिया महल जामा मस्जिद
दिल्ली-6 फोन : 3264524

रज़वी किताब घर

114, गैबी नगर, भिवंडी-421302
ज़िला थाना (महाराष्ट्र) फोन : 55389